Naveen Shodh Sansar (An International Refereed / Peer Review Multidisciplinary Research Journal)
RNI No.- MPHIN/2013/60638, ISSN 2320-8767, E- ISSN 2394-3793, Scientific Journal Impact Factor (SJIF)- 8.054,
January to March 2026, E-Journal, Vol. I, Issue LIII (53), ISO 9001:2015 - E2024049304 (QMS)

गोविंद गुरु के नेतृत्व में भील आंदोलन : एक ऐतिहासिक अध्ययन

रंजना चौहान*

* शोधार्थी, जनार्दन राय नागर राजस्थान विद्यापीठ, उदयपुर (राज.) भारत

शोध सारांश – 20 सी सदी के शुरुआती दौर में दक्षिण राजस्थान डूंगरपुर बांसवाड़ा और गुजरात के सीमावर्ती क्षेत्रों में गोविंद गुरु के नेतृत्व में हुए भील आंदोलन (भगत आंदोलन) का ऐतिहासिक विश्लेषण प्रस्तुत करता है स यह आंदोलन न केवल सामाजिक और धार्मिक सुधारो जैसे मांस मदिरा निषेध, शिक्षा का माध्यम था, बल्कि उन्होंने आदिवासियों को ब्रिटिश और रियायती दमन के खिलाफ एक राजनीतिक मंच सन 1843 में संप सभा के माध्यम से एकजुट किया स इस अध्ययन में 1913 के मानगढ़ नरसंहार की घटनाओं और आदिवासी इतिहास पर इनके दूरगामी प्रभाव की जांच की गई है। 19वीं सदी के अंत में राजस्थान के आदिवासी समुदाय अत्यधिक गरीब, कुरीतियां, जमीदारों के शोषण और ब्रिटिश रियासती बेगार प्रथा से त्रस्त थे। गोविंद गुरु ने 1858 से 1931, जिन्हें गुरु गोविंद गिरी के नाम से भी जाना जाता है, उन्होंने एक समाज सुधारक के रूप में आदिवासियों को जगाने का बीड़ा उठाया था। इस आंदोलन का मुख्य उद्देश्य भीलो को सामाजिक रूप से शिक्षित करना, अंधविश्वासों से मुक्त करना और राजनीतिक रूप से जागरूक बनाना था।

शब्द कुंजी – दक्षिण राजस्थान, भील आंदोलन, ऐतिहासिक विश्लेषण, धार्मिक सुधार, ब्रिटिश और रियायती दमन, संप सभा, आदिवासी इतिहास, बेगार प्रथा, अंधविश्वासों से मुक्त।

गोविंद गुरु के नेतृत्व में भील आंदोलन : एक परिचय– गोविंद गुरु का जन्म 1858 ई. मैं डूंगरपुर जिले के बेडसा गांव में एक बंजारा परिवार में हुआ था। बचपन में गोविंद गुरु ने गांव के एक मंदिर के पुजारी से अक्षर ज्ञान प्राप्त किया और उनके समक्ष ही उन्होंने अत्याचार एवं अनाचार का मुकाबला करने का प्रण लिया। युवावस्था में वह स्वामी दयानंद सरस्वती के संपर्क में आए। स्वामी जी के उपदेशों में उनमें एक नवीन उत्साह और उमंग पैदा हुआ। स्वामी जी की प्रेरणा से वह युवावस्था में ही जनजातियों की सेवा में जुट गए। गोविंद गुरु ने बांसिया ग्राम में धुणी और निशान स्थापित किया और आसपास के भीलों को आध्यात्मिक शिक्षा देनी प्रारंभ की। उन्होंने कहा था, मैं जब भीलों के बीच रहना प्रारंभ किया, तब उन्हें सृष्टि करता का कोई ज्ञान नहीं था। जो भी भील मेरे पास आए, मैंने उन्हें धर्म और सत्य के मार्ग पर चलने तथा ईश्वर की आराधना करने को कहा। मैंने उनसे कहा कि वे नफरत की भावना ना रखें, किंतु सभी को एक ही परमात्मा की संतान समझे और दूसरों के साथ शांति से रहने का प्रयास करें। वे भूत प्रेत, चुड़ैल आदि पर विश्वास नहीं करते थे बल्कि भूत प्रेत को भगाने के लिए धोनी और निशान की पूजा करते थे। गोविंद गुरु ने भीलो को मांस एवं मदिरा का सेवन न करने का आहान किया था।

गोविंद गुरु एक कुशल एवं योग्य नेता तथा आंदोलनकारी थे।उनके अंदर नेतृत्व करने की अभूतपूर्वक क्षमता थी।वह एक ज्ञानी एवं संत पुरुष थे। उनका तेज आरोग्य एवं अशिक्षित वर्ग को प्रभावित करना ही था, साथी शिक्षित एवं सभ्य वर्ग को भी प्रभावित करते थे एवं अपनी शिक्षा एवं कल्याणकारी कार्यों से वह शीघ्र ही भीलो में लोकप्रिय हो गए। इसलिए संपूर्ण भील समाज उनका पर्याप्त आदर करता था और उनके द्वारा निर्देशित दिशा निर्देश पर कार्य करते थे। भीलो को सामाजिक दृष्टि से संगठित करने के लिए 1905 ई. मैं उन्होंने संप सभा की स्थापना की तथा भीलो को हिंदू धर्म के दायरे में रखने के लिए भगत पंथ की स्थापना की।संप सभा के माध्यम से उन्होंने मेवाड़, डूंगरपुर, इडर, गुजरात, विजयनगर और मालवा के भीलों को संगठित किया।उन्होंने एक और तो भीलों में व्याप्त सामाजिक बुराइयों और पूर्तियों को दूर करने का प्रयत्न किया तो दूसरी ओर उन्होंने अपने मूलभूत अधिकारों का एहसास कराया।गोविंद गुरु के अथक और अनवरत प्रयासों से ही आदिवासी लोगो ने चोरी करना, मांस खाना, शराब पीना छोड़ दिया था।

भीलो में बढ़ती हुई जागृति के आसपास की रियासतों के शासक सशक्त हो उठे। राज्य अधिकारी अपने क्षेत्र से गोविंद गुरु एवं उसके पंत को उखाड़ने का प्रयास करने लगे। भीलो के साथ बहुत ही बुरा व्यवहार किया जाने लगा एवं भीलो को भगत पथ छोड़ने को विवश किया जाने लगा। राज्य अधिकारियों के इस व्यवहार से भीलो के मन में घृणा उत्पन्न हो गई और वे राज्य अधिकारियों के विरुद्ध आंदोलन छेड़ने को विवश हो गए।

नए साहित्य का सृजन – गोविंद गुरु ने अपने संदेश को लोगों तक पहुंचाने के लिए साहित्य का सृजन भी किया। वे लोगों को गीत सुनाते थे, जो इस प्रकार था –

तालोद मारी थाली है, गोदरा में मारी कोड़ी है (बजाने की)

अंग्रेजिया नई मानू नई मानू अमदाबाद मारो जाजेम है –2 कांकरिये मारो तंबू हे

अंग्रेजिया नई मानू नई मानू धोलागढ़ मारो ढोल है, चित्तोड़ मारी सोरी (अधिकार क्षेत्र) है।

आबू में मारो तोरण है, वेणेश्वर मारो मेरो है। अंग्रेजिया नई मानू, नई मानू दिल्ली में मारो कलम है, वेणेश्वर में मारो चोपड़ो है,

अंग्रेजिया नई मानू, नई मानू हरि ना शरणा में गुरु गोविंद बोल्या जांबू (देश) में जामलो (जनसमूह) जागे है, अंग्रेजिया नई मानू, नई मानू।।

भीलो के आंदोलन के कुछ अन्य कारण – प्राचीन काल से भील जंगल से एकत्रित वस्तुओं पर निर्वाह करते थे, किंतु अब उन्हें कृषि कर्म के लिए विवश किया गया। फल स्वरुप अभी सीधे अंग्रेज, देसी राज्यों और जागीरदारों के नियंत्रण में आ गए। क्योंकि भूल स्वभाव से स्वतंत्रता प्रिय थे, अत: उन्होंने किसी के नियंत्रण में रहना पसंद नहीं किया। इसके अतिरिक्त राज्य और जागीरदार उनसे भारी कर वसूल कर रहे थे। बताई प्रथा के अंतर्गत भी उनसे भारी लगान वसूल करते थे। यदि वे लगन नहीं दे पाए तो राज्य अधिकारी उनके साथ अत्यंत ही क्रूर एवं निर्मम व्यवहार करते थे। कृषि भूमि पर उनका कोई अधिकार नहीं था वह तो मात्र खेती करने वाले दास थे। वे जब जंगल से कोई वस्तु बिना कर दिए नहीं ले जा सकते थे। भील क्षेत्र में बैठ बैग प्रथा भी सामान्य थी वीर लोग राज्य और जागीरदार के लिए बेघर करने को भी विवश किए गए। राज्य अधिकारी उनसे माल धुलवाने रखवाली आदि की बेघर करवाते थे। राजपूताना के ए . जी . जी ने पत्र में लिखा था , वर्तमान परिस्थितियों में भीलो पर करो का बोझ बहुत ज्यादा है उनमें बेघर का आतंक इतना अधिक है कि पांव के पांव खाली हो गए हैं और भूमि पड़त पड़ी है। बल लंबे समय से बगैर कर रहे थे किंतु गोविंद गुरु की शिक्षा में उनमें जागृति उत्पन्न हो गई। गोविंद गुरु के आंदोलन ने उनमें अन्याय के विरुद्ध लड़ने की जागृति उत्पन्न हो गई थी।

भील आंदोलन में गोविंद गुरु की भूमिका– 1913 के भील आंदोलन का तात्कालिक कारण गोविंद गुरु के नेतृत्व में धार्मिक आंदोलन था। गोविंद गुरु स्वयं एक धार्मिक व्यक्ति थे तथा भीलो के धर्म सुधार हेतु उन्होंने भगत पंथ की स्थापना की थी। इस पंथ के दैनिक कार्यक्रम निश्चित थे तथा इस पंथ के सदस्यों की एक विशेष पहचान थी। यह एक आध्यात्मिक पेंट था। इस पंथ में दीक्षित व्यक्ति के गले में रुद्राक्ष की माला पहननी पड़ती थी तथा दूनी जलानी पड़ती थी। अंग्रेजों ने अपने कूटनीति से भीलो की निर्धनता और निरक्षता का लाभ उठाया और इस क्षेत्र में ईसाई मिशनरीज ने हजारों आदिवासियों का धर्म परिवर्तन करके उन्हें इसी बना दिया। गोविंद गुरु ने इस धर्म परिवर्तन का घोर विरोध किया तथा स्वामी दयानंद सरस्वती के आर्य समाज के प्रभाव से शुद्धि आंदोलन चलाया जिसमें धर्म परिवर्तन लोगों की शुद्ध करके उन्हें फिर हिंदू धर्म की मुख्य धारा से जोड़ दिया। भगत पंथ के समर्थकों का ईसा मसीह के आदर्शों से कोई विरोध नहीं था किंतु गोविंद गुरु को यह आशंका थी कि यदि धर्म परिवर्तन के कार्य का विरोध नहीं किया गया तो हिंदू धर्म के पूजा पाठ, नियम धर्म, प्रार्थना गीत, मंदिरों आदि का अस्तित्व ही समाप्त हो जाएगा। यह इस बात को भी जानते थे कि पुजारी और पुरोहित अपने निर्मित स्वार्थ के कारण जागरूक नहीं हो रहे हैं अत: उनमें जागृति लाने की आवश्यकता थी।

गोविंद गुरु के आंदोलन ने भीलो को न केवल धार्मिक भावनाओं को ही जागृत किया, बल्कि भील समाज का ध्यान उनकी आर्थिक एवं राजनीतिक स्थिति की ओर भी आकर्षित किया। गोविंद गुरु जानते थे कि देसी रियासतों के शासक जो अंग्रेजों के गुलाम हो चुके हैं और अंग्रेज केवल अपने स्वार्थ की पूर्ति के लिए कूटनीति खेल रहे हैं। अंग्रेज अपनी कूटनीति से एक और जो देसी रियासतों के शासको को शक्तिहीन करना चाहते थे तो दूसरी ओर उन्हीं के कंधों पर बंदूक रखकर नागरिकों की स्वतंत्रता एवं सम्मान को नष्ट करना चाहते थे। अत: अपने सम्मान एवं अस्तित्व की रक्षा के लिए गोविंद गुरु ने अपने आंदोलन में शिक्षा पर अत्यधिक बल दिया तथा आदिवासी बहुल क्षेत्र में अनेक पाठशाला स्थापित की। इस प्रकार भीलों में सामाजिक राजनीतिक आर्थिक एवं सांस्कृतिक चेतना जागृत करना गोविंद गुरु के आंदोलन का मुख्य उद्देश्य था। लेकिन उन्होंने अपने आंदोलन में कभी हिंसा का समर्थन नहीं किया बल्कि अहिंसा के पक्षधर रहे। गोविंद गुरु का यह आंदोलन अन्य धर्म एवं समाज सुधार आंदोलन से भिन्न था।

गोविंद गुरु के प्रयासों से राजपूताना के दक्षिणी भाग के पहाड़ी इलाकों के भूल पूरी तरह से संकेत हो गए थे। उन में जागृति को एक नई लहर उत्पन्न हो गई। गोविंद गुरु के आंदोलन ने राजस्थान के शासक को और ब्रिटिश अधिकारियों की नींद हराम कर दी थी। ब्रिटिश अधिकारी उसके इस आंदोलन में भील राज्य की स्थापना की संभावना देख रहे थे। वस्तुतरू भीलो को कोई ऐसी इच्छा नहीं थी लेकिन अंग्रेजों ने भीलो के बढ़ते हुए आंदोलन को कुचलना के लिए ऐसा प्रचारित करना आरंभ कर दिया था। अप्रैल 1913 में डूंगरपुर राज्य की पुलिस ने गोविंद गुरु को गिरफ्तार कर लिया और उनके परिवार को भी पुलिस निगरानी में रखा गया। उन्हें तीन दिन बाद छोड़ दिया गया लेकिन उन्हें डूंगरपुर राज्य से बाहर जाने को कहा गया , वे गुजरात के इधर राज्य में चले गए किंतु वहां के शासक ने भी उन्हें वहां से भागने का प्रयास किया।

मानगढ़ –हत्याकांड– गोविंद गुरु और उनके अनुयायियों को राज्य द्वारा भीषण आक्रांत किया गया। राज्य और अंग्रेज पदाधिकारी द्वारा भगत आंदोलन के विरुद्ध यह प्रचार करना आरंभ कर दिया गया कि आंदोलन भील राज्य की स्थापना के लिए है। वास्तव में इस आंदोलन का ऐसा कोई उद्देश्य नहीं था इस आंदोलन का मुख्य उद्देश्य तो भील समाज को हिंदू धर्म के दायरे में रखते हुए उसे सामंतवाद के शोषण से मुक्त करना था। अंग्रेजों ने गोविंद गुरु को तथा उनके आंदोलन को बदनाम करने के लिए ऐसा प्रचारित किया था। गोविंद गुरु इधर से अपने साथियों सहित मनगढ़ की पहाड़ी (बांसवाड़ा और सुंथ राज्य की सीमा पर स्थित) पर आ गए। पहाड़ों घने वन से गिरी हुई थी और इस प्रकार प्राकृतिक रूप से सुरक्षित थी। गोविंद गुरु ने अक्टूबर 1913 को भीलो को मनगढ़ में एकत्रित होने के लिए चारों ओर संदेश भेज दिए। भील अपने साथ रसद एवं हथियार काफी मात्रा में ले आए थे। अत: उसे समय यह अफवाह फैली कि भूल दिवाली से चार दिन पूर्व सुंथ राज्य पर आक्रमण करने वाले हैं। जबकि गोविंद गुरु के अनुयायियों से केवल यह कहा गया था कि वह मानगढ़ पहुंचे। लेकिन गोविंद गुरु के अनुयाई मानगढ़ चलते वक्त रास्ते में भूल पलों को अधिकारियों के विरुद्ध सैनिक कार्यवाही के लिए तैयार रहने को कह गए। इस प्रकार हजारों की संख्या में भील लोग हथियार लेकर मानगढ़ पहुंच गए।

30 अक्टूबर 1913 को पुलिस थानेदार ने दो सिपाहियों को यह देखने के लिए भेजो कि वहां क्या हो रहा है, बिलोने इस दोनों सिपाहियों को पकड़ लिया। इनमें से एक सिपाही को मार डाला गया तथा दूसरे को बुरी तरह से बीटा गया और फिर उसे बंदी बना लिया गया। 1 नवंबर को कुछ भी लोगों ने प्रतापगढ़ से सुंथ किले पर भी आक्रमण किया, किंतु असफल होकर लौट गए। भीलो को इस कार्यवाही ने सुंथ, बांसवाड़ा, डूंगरपुर और इडर राज्यों को चोकन्ना कर दिया। उन्होंने ए.जी.जी. से प्रार्थना की की गोविंद गुरु को गिरफ्तार किया जाए तथा भीलो के एक हिंसक संगठन को समाप्त किया जाए। उनकी स्वीकृति मिलते ही 6 से 10 नवंबर 1913 के बीच मेवाड़ भील कोर की दो कंपनी 104 बेलजली राइफल्स की एक कंपनी, राजपूत रेजीमेंट

की एक कंपनी और जाट रेजीमेंट की एक कंपनी मानगढ़ की पहाड़ी पर भीलो को तीतर बीतर करने के लिए पहुंच गई। 8 नवंबर को इन फौजी पलटनों ने मानगढ़ की पहाड़ी को चारों ओर से घेर लिया और भीलो पर अंधाधुंध गोलियां की बौछार शुरू कर दी। सरकारी आंकड़ों के अनुसार लगभग 1500 भील मारे गए लेकिन नवीनतम शोध के अनुसार लगभग 3000 भील मारे गए थे और यह हत्याकांड, जलियांवाला बाग हत्याकांड से किसी भी प्रकार से काम नहीं था। गोविंद गुरु को गिरफ्तार कर लिया गया तथा उन्हें अहमदाबाद की जेल में भेज दिया गया। इस प्रकार भी लोग के इस भगत आंदोलन को निर्माता पूर्वक कुचल दिया गया।

गोविंद गुरु पर किसी थानेदार की हत्या का आरोप लगाकर मुकदमा चलाया गया। सभी लोग इस बात को अच्छी तरह जानते थे कि वह मुकदमा कितना झूठ है। अनेक राजदरबारियों ने गोविंद गुरु को छुड़ाने का प्रयास किया किंतु अंग्रेज अधिकारी तो गोविंद गुरु और उसके संगठन इतने क्रोध थे कि वे उसे पूरी तरह समाप्त करने पर तुले हुए थे, अत: मुकदमे का नाटक रचते हुए गोविंद गुरु को फांसी की सजा सुनाई गई, लेकिन बाद में यह फांसी की सजा 20 वर्ष की कैद की सजा में परिवर्तित कर दी गई, गोविंद गुरु की लोकप्रियता को देखते हुए यह सजा भी बाद में काम करके 10 वर्ष के कठोर कारावास में परिवर्तित कर दी गई। 1930 में उन्हें इस छत पर रिहा किया गया कि वह सुंथ, डूंगरपुर, बांसवाड़ा, कुशलगढ़ एवं इडर राज्य की सीमाओं में प्रवेश नहीं करेंगे। इस प्रकार अंग्रेजों ने गोविंद गुरु के भगत आंदोलन को पूरी तरह कुचल दिया।

निष्कर्ष – गोविंद गुरु के नेतृत्व में भील आंदोलन विशेष कर भगत आंदोलन का ऐतिहासिक अध्ययन यह दर्शाता है कि यह न केवल एक सामाजिक धार्मिक सुधार आंदोलन था बल्कि ब्रिटिश औपनिवेशिक सत्ता और स्थानीय भागीदारों के दमन के खिलाफ एक संगठित राजनीतिक विद्रोही था। उन्होंने भील समाज में चेतना का उदय किया साथ ही भीलो में व्याप्त सामाजिक कुरीतियों को दूर करने और उन्हें वक्त बनाने के लिए यह आंदोलन चलाया था। भीलो को संगठित करने और उनमें भाईचारा बढ़ाने के लिए उन्होंने सम सभा की स्थापना की जिसने आदिवासियों में आत्मसम्मान और एकता की भावना पैदा की। अंगद हत्याकांड अदम्य साहस और शहादत से मानगढ़ की पहाड़ी पर शांतिपूर्ण सभा कर रहे हजारों भीलो पर ब्रिटिशो ने मशीन गन से गोलियां बरसाई। 1500 से अधिक भील आदिवासियों ने इस नरसंहार में शहादत दी जिसे जलियांवाला बाग से भी बड़ा और विभत्स माना जाता है यह ब्रिटिश दमन की पराकाष्ठा थी।

संदर्भ ग्रंथ सूची :-

1. राजस्थान के इतिहास की रूपरेखा – डॉ. कालूराम शर्मा एवं डॉ. प्रकाश व्यास, पंचशील प्रकाशन, जयपुर।
2. भारतीय राजनीतिक व्यवस्था – डॉ. पुखराज जैन – साहित्य भवन पब्लिकेशन, आगरा।
3. राठौर राजकुमार – राजस्थान में स्वतंत्रता संग्राम के दौरान भील आंदोलन।
4. बिश्नोई,बी.आर. भील जन आंदोलन और गोविंद गुरु।
5. राजस्थानी शोध संस्थान – मानगढ़ धाम: भीलो की शौर्य गाथा।
6. सिंह,आर.पी.– जनजातीय आंदोलन : एक ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य।
7. शर्मा,आर.के.(2010) राजस्थान का स्वतंत्रता संग्राम, जयपुर : राजस्थान हिंदी ग्रंथ अकादमी।
8. वर्मा,एस.पी.(2015) वागड़ का इतिहास, उदयपुर – हिमांशु प्रकाशन।
9. शुक्ला, H.L. – अंग्रेजी शासन में सामंती शोषण एवं जनजातीय भगत आंदोलन (गोविंद गुरु का योगदान)
10. मीणा, हरताराम (2012): मानगढ़ धाम: द आदिवासी जलियांवाला।
11. नथनी प्रकाश – (1998) : राजस्थान का स्वाधीनता आंदोलन।
12. मेहता, एस. एस. (1987): राजस्थान में भील आंदोलन।

****